तर्ज--आने से जिसके आये बहार

पढ़ने से जिसके हो बेड़ा पार,
सुनने से आयें सुन्दर विचार
बड़ा सुख देती है,
मेरे सदगुरू की वाणी
1--ध्यान से पढ़े जो,
पट अन्दर के है खोल देती
प्रेम से सुने जो,
निजधाम मे पहुंचा देती
हमारी है हमारे लिए,हुई मेहरबानी है
2--फरमाई मेरे सतगुरू,
मुक्ति दिलाने आई
संबधं मूल का था,
श्री जी ने आ सुनाई
समझो तो सोचो तो ,यह अपनी कहानी है

Nijanand App